

दृष्टान्त चित्रण

(ILLUSTRATIONS)

चित्रकला विषय एक बहुत ही गहन एवं विस्तृत है। इस विषय को दो मुख्य भागों में विभक्त किया हुआ है-

1. ललित कला (रंजन कला) (Fine Art) 2. वाणिज्य कला (विज्ञापन कला) (Commercial Art)। आपके पाठ्यक्रम में दोनों प्रकार की कलाओं का समावेश है, जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार सुचारू रूप से कार्य कर सके। Composition Illustration ललित कला (Fine Art) के अन्तर्गत आ जाते हैं। दूसरी ओर Poster Design, Book Cover Design वाणिज्य कला (Commerical Art) के अंग हैं। यद्यपि आपके अध्ययन स्तर पर यह कार्य बहुत विस्तृत ढंग से नहीं होता फिर भी इन क्षेत्रों में काफी सरलता एवं आकर्षक ढंग से विषयों को समझाने का प्रयास किया गया है। मूल सिद्धान्तों का अच्छी प्रकार विवरण किया गया है। कला के प्रति रुचि रखने वाले छात्रों के लिए बुनियादी पूर्ण ज्ञान प्रस्तुत है। चित्रकला में केवल मूल सिद्धान्तों का ज्ञान अर्जन होना ही आवश्यक है। तत्पश्चात् प्रत्येक कला छात्र की कल्पना शक्ति तथा सृजनात्मक शक्ति अपने ही ढंग एवं स्तर से विकसित होती हैं। प्रत्येक कला विद्यार्थी की कल्पना एवं कार्यक्रम समान नहीं हो सकता, इसीलिए कला विषय अन्य शैक्षणिक विषयों से कुछ बातों में भिन्न सा लगता है। कला में अपनी मौलिकता की झलक अवश्य होनी चाहिए।

दृष्टान्त Illustrations चित्रों में भी यही सिद्धान्त अपनाए जाएंगे, दृष्टान्त चित्र के लिए विषय देखकर घबराने की बात नहीं आपकी पुस्तक में मानव आकृति, पक्षियों की आकृति एवं पशुओं की आकृतियों को बनाने का ढंग दिया गया है। पहले उनका स्वतंत्र हाथ से खूब अभ्यास यदि किया जाए तो आपको चित्रांकन में बड़ी सुविधा, सुगमता एवं विश्वास की भावना जागृत होगी। किसी भी दृष्टान्त चित्र को देखिए, उसमें मानव, पशु, पक्षी तथा प्रकृति की चीजें ही दिखाई देंगी, और यदि आपने इनका गम्भीरता एवं लगन से अभ्यास किया है तो आपको कोई कठिनाई नहीं आएगी। दृष्टान्त चित्र में किसी विशेष घटना व दृश्य का संक्षिप्त रूप दिखाया जाता है। अतः उस दृश्य के मुख्य पात्र या वस्तु को चित्र में प्रधानता देना आवश्यक है। वरना दृष्टान्त चित्र की

उपयोगिता निष्फल मानी जाएगी। कला के सभी उपविषयों के लिए अत्यन्त आवश्यक है कि कला छात्र के पास हर समय रेखांकन पुस्तक (Sketch Book) अवश्य होनी चाहिए। जहां पर भी आकर्षक वस्तु देखने में आती है उसका वहीं पर रेखाचित्र खींचा जा सकता है, प्रत्येक चीजें जो आपके सम्पर्क में सुबह से सायं तक आती हैं आपके कला विषय की सृजनात्मक चीजें हैं।

प्रायः देखा जाता है कि जब विद्यार्थियों को कोई खास विषय पर चित्र बनाने को कहा जाता है तो वे पहाड़ समझकर बैठ जाते हैं और सोचते हैं कि ये तो बनाना बहुत कठिन है, या बने हुए चित्र को ट्रेस करके कार्य पूर्ण करने का प्रयास करते हैं। यह बिल्कुल गलत आदत है। कभी भी किसी चित्र को ट्रेस करने की आदत नहीं डालनी चाहिए और न ही किसी चित्र की वैसे ही कापी (Copy) करनी चाहिए। ठीक है कुछ संकेत के तौर पर चीजों का अनुकरण किया जा सकता है, इससे अपनी कल्पना शक्ति और सृजन करने की शक्ति का हास होता है जो कि पहले ही कला की मुख्य बातें बताई गई हैं।

किसी भी विषय पर चित्र बनाने में जो बातें आपकी सहायता कर सकती हैं वह हैं 1. अपनी Sketch Book पर अनेक प्रकार के चित्रों का चित्रांकन या रेखांकन। 2. इन विभिन्न रेखांकनों का बार-बार स्वतन्त्र हाथ से अभ्यास। यदि आप इन चीजों को अपना दैनिक कार्य समझ कर चलें तो आप कभी भी, किसी भी विषय पर चित्र स्वतन्त्रता पूर्वक एवं विश्वास से बना सकते हैं, और इससे भी महत्वपूर्ण एवं गौरव की बात इसमें यह होगी कि अभ्यास द्वारा बनाई गई कृतियों में मौलिकता (Creation) झलकेगी और यही सच्ची एवं सफल कला है।

दृष्टान्त चित्रों को बनाने के लिए उपरोक्त अभ्यास और भी आवश्यक हो जाता है क्योंकि चित्र को सारांश में बनाना होता है, मानव एवं पशुपक्षियों की बहुलता आकृतियों की होती है, आकृतियों में उनकी भावनाओं की झलक का होना भी अनिवार्य है। आपने कई पुस्तकों, रसालों एवं बच्चों की पुस्तकों में चित्र कथाएँ देखी हैं, उसमें चित्र का गहराई से अध्ययन एवं मनन करना भी लाभप्रद है।

दृष्टान्त चित्र आरम्भ करने से पहले अब इसके मूल सिद्धान्त को एक दृष्टि से देख लेते हैं, दृष्टान्त चित्र के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. विषय को संक्षिप्त करना।
2. विषय की मुख्य आकृति को प्रधानता देना।
3. मुख्य आकृति की भावनाएं स्पष्ट होना।

उपरोक्त बातों के अतिरिक्त चित्रों की रेखाओं एवं रंगों में भी पर्याप्त प्रभाव एवं आकर्षण होना चाहिए, रेखाओं में ताकत (Strength) होनी चाहिए तभी वह अपनी भावनाओं को अच्छी प्रकार व्यक्त कर सकती हैं।

अभ्यास-1

Illustrations (दृष्टान्त चित्र) बनाने में मानव आकृति की अपनी विशेषता है। प्रत्येक चित्र में मानव का प्रयोग होता है अतः मानव आकृति का सही अनुपात, विभिन्न मुद्राएं, विभिन्न भावनाएं प्रदर्शित करना इत्यादि सीखना नितान्त आवश्यक एवं लाभदायक है। इस अभ्यास में बिल्कुल प्रारम्भिक बातें समझाई गई हैं ताकि आगे चलकर चित्र बनाने में कठिनाइयां न आएँ। सर्वप्रथम मानव के शरीर का अनुपात दिया गया है। सिर को इकाई मानकर उससे साढ़े सात गुणा पाँव तक मानव की लम्बाई होती है। हर भाग शरीर के कौन से भाग को स्पर्श करता है यह भी चित्र से स्पष्ट होता है। शरीर के अंग किस प्रकार चलते हैं, जिससे विभिन्न मुद्राएं बनती हैं दूसरे चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार अनुपात याद रखकर हाथ, पाँव विभिन्न स्थितियों में बनाकर अभ्यास किया जाना चाहिए। यदि आपको यह अनुपात अच्छी तरह याद हो गया है तो कोई भी काम करता हुआ मानव तुम आसानी से बना सकते हो। इसी अभ्यास के तीसरे चित्र में मानव सिर को समझाया गया है। सिर की गोलाई है, उसके बीचों बीच एक रेखा खींची गई है, इस रेखा पर आँखें बनेंगी। आँख और सिर के ऊपरी हिस्से के अर्द्धभाग तक माथा बनता है और माथे के ऊपर बाल होते हैं। आँखों से ठोड़ी तक के अर्द्धभाग पर नाक आता है। नाक और ठोड़ी के अर्द्धभाग से थोड़ा ऊपर मुँह बनता है। आँखों के सीध पर दोनों ओर कान बनते हैं। इसके साथ ही सिर यदि ऊपर की ओर मुड़ा हो तो क्या स्थिति होती है, चित्र में दर्शाया गया है। उसके बाद सिर नीचे झुका हो तो कैसी स्थिति बनानी है यह सब समझाया गया है।

यह पहले अभ्यास का बुनियादी ज्ञान की दृष्टिकोण से बहुत महत्व है। सारी Figures Drawings का सही और गलत होना इसी अनुपात पर निर्भर करेगा। अतः आपको परामर्श दिया जाता है कि जितनी भी अधिक Practice आप इस अभ्यास की करेंगे उतना ही अधिक सहीपन (accuracy) तथा चित्र में निखार आएगा। देखने में भले ही इस अभ्यास में केवल रेखाएँ ही हैं परन्तु आगे चलकर इन्हीं रेखाओं के ढाँचे पर माँस-पेशियां जुड़ेंगी तथा वस्त्र पहनाए जाएंगे और उसमें पूरी सजीवता सी प्रतीत होने लगेगी, Sketch Book में ठीक इसी अनुपात से मानव को विभिन्न हरकतों में बनाने का बार-बार अभ्यास किया जाए। जैसे दौड़ता हुआ आदमी, कसरत करते हुए, खेल खेलते हुए, नाचते हुए सभी मुद्राओं में केवल इन्हीं रेखाओं का झुकाव काम आता है।

अभ्यास-2

मानव आकृति के साथ पक्षियों की आकृतियाँ भी चित्रों में बनानी पड़ती हैं। पक्षियों का चित्रण अण्डाकार गोलाइयाँ बनाकर आसानी से किया जा सकता है। सिर के लिए छोटा अण्डाकार बनेगा। पेट के लिए बड़ा बनेगा। सिर और पेट के बीच में कितना अन्तर रखना है, वह अलग-अलग पक्षियों की बनावट पर निर्भर करता है। आपके इस अभ्यास में तोता और मोर का चित्र बनाने का ढंग दिया गया है। तोते की गर्दन मोर की गर्दन से छोटी होती है इसलिए सिर के अण्डाकार की दूरी पेट से कम होगी। जबकि मोर के चित्र में सिर और पेट के अण्डाकार की दूरी अधिक होनी चाहिए। इस प्रकार जो पक्षी बनाना है पहले उसका गहराई से अध्ययन करो। प्रत्येक भाग को ध्यान से देखो। पहले तो बनावट देखो फिर उसका रंग आदि सही दर्शाना है, तभी उसका सही चित्र बन पाएगा। इस अभ्यास के अन्तर्गत अन्य सभी प्रकार के पक्षियों का विस्तार से चित्रण किया जाना चाहिए।

अभ्यास-3

अभ्यासों को इस क्रम में रखा गया है जिसमें आसान से कठिन कार्य की ओर आप अग्रसर हो सकें। पक्षियों के चित्र के बाद आप पशुओं का चित्रण करेंगे ताकि जब भी आप को कोई पूर्ण चित्र बनाना पड़े तो इन अभ्यासों का पूरा लाभ उठा सकें। दृष्टान्त चित्रों में पशु, पक्षी या मानव का पूरा शरीर बनाना अनिवार्य नहीं है, जो भी भाग कोई भावना व्यक्त कर रहा हो वही आप दिखा सकते हैं, इसमें अधिकतर मुँह का भाग बड़ा महत्वपूर्ण है, इसलिए केवल मुखाकृति का गहराई से अध्ययन करना आश्यक हो जाता है। इस अभ्यास में कुत्ता, लोमड़ी, शेर तथा बकरी के मुँह की आकृतियाँ सूक्ष्म रूप से दिखाई गई हैं, ये आकृतियाँ प्रायः दृष्टान्त चित्रों (Illustrations) में बहुत प्रयोग होती हैं। इस प्रकार अन्य सभी प्रकार के पशुओं का चित्रण करो।

अभ्यास-4

मानव, पशु पक्षियों का कला को दृष्टि से आपने चित्रांकन किया है। खूब अभ्यास (Practice) भी कर लिया होगा। अब दृष्टान्त चित्र कहानी चित्रण से करते हैं। आपकी हिन्दी और अंग्रेजी की पुस्तकों में इन कहानियों का प्रसंग आता है। उसमें आप लिखकर कहानी समझाते हैं। कला में आपने केवल चित्रों से कहानी को प्रदर्शित करना है। इस अभ्यास में प्यासा कौवा (Thirsty Crow) का चित्रण करना है। जो भी बात आप समझाना चाहते हैं चित्र में स्पष्ट होना चाहिए। किस प्रकार

अभ्यास-5

कहानी चित्रण के अन्तर्गत आप 'प्यासा कौवा' का दृष्टान्त चित्र बना चुके हैं। इसी शृंखला में 'लोमड़ी और कौवा' का सारांश चित्र बनाओगे। अब कौवे के साथ लोमड़ी का चित्र आ गया है। पिछले अभ्यास में आपने पशुओं के चित्रों का अभ्यास किया है, उसमें लोमड़ी का भी चित्र बनाया गया था। अब आसानी से आप बैठी हुई लोमड़ी बना सकते हो। थोड़े अभ्यास (Practice) की बात है। पहले भाग में लोमड़ी कौवे की झूठी प्रशंसा कर रही है और कौवा खुश होकर जैसे ही मुंह खोलता है, रोटी का टुकड़ा नीचे गिर गया और चालाक लोमड़ी उठाकर चाल पड़ी। यह केवल चित्र में प्रकट हो रहा है। अब इसी प्रकार अन्य कहानी चित्रण करो, जैसे लालची कुत्ता, शेर और खरगोश, शेर और चूहा, अंगूर खट्टे हैं आदि कहानियों का सारांश चित्रण करके अनुभव प्राप्त करें।

अभ्यास-6

इस अभ्यास में कुछ आगे पढ़ते हैं। पशु पक्षियों का चित्रण आपने काफी कर लिया होगा। अब मानव आकृतियों का चित्रण आरम्भ करते हैं। अपने-अपने विद्यालय के महत्वपूर्ण दिवसों, समारोह आदि का आनन्द तो लिया ही होगा, उसमें से 'वार्षिक पारितोषिक उत्सव' काफी मनोरंजक, उत्साह वर्धक एवं प्रेरणादायक उत्सव होता है। जिस दिन आप ने साल भर में जो भी उपलब्धियां प्राप्त की हैं, उनका प्रमाणपत्र, पुरस्कार व आशीर्वाद प्राप्त करते हो। चाहे वह शैक्षणिक क्षेत्र में हो या क्रीड़ा क्षेत्र में सबका प्रशस्तिपत्र आपको दिया जाता है। आपके माता-पिता जी व भाई बहन आदि सब आपको पुरस्कार लेते समय देखकर प्रफुल्लित होते हैं। तो लीजिए ऐसे अवसर को अपने कागज़ पर तूलिका से क्यों न बांध लें। सर्वप्रथम उस वातावरण का पूरा दृश्य अपने मन में लाओ, मंच किस प्रकार सजा होता है, दर्शक दीर्घा कैसी बनी है। माइक कहां लगा है, मुख्य अतिथि कैसे पुरस्कार वितरित करते हैं, आदि सभी बातें सोचकर पहले रफ स्केच (Rough Sketch) में अपनी सभी भावनाओं को समेट लो, फिर बाद में एक-एक आकृति को अन्तिम रूप देते जाओ। यहां पर भी कला का वही नियम याद रखना है कि किस चीज़ की प्रधानता (Domination) और किस चीज़ को गौण (Subordination) रखना है। आम तौर पर Domination और Subordination का नियम हर चित्र में पालन किया जाता है। आप इस दृष्टान्त चित्र में चाहेंगे कि मुख्य अतिथि बच्चे (विद्यार्थी) को अपने करकमलों से पुरस्कार वितरण कर रहे हैं, दर्शाया जाए। इसके लिए खड़े होने का स्थान, ढंग आदि सही होना चाहिए। मुख्य पुरस्कार देने वाला और पुरस्कार लेने वाले बच्चे हैं। इसी प्रकार अपने विद्यालय के अन्य उत्सवों का Illustration करो।

अभ्यास-7

विद्यालय से सम्बन्धित सभी उत्सवों तथा समारोहों का आपने इससे पहले चित्रांकन कर लिया होगा। काफी Practice हो चुकी होगी। विद्यालय के वातावरण से बाहर निकलते हैं—रास्ते में, बाजार में तथा पार्क आदि में भी आपको बहुत सारी आकृतियाँ ऐसी मिलेंगी जो स्वतः ही अपनी ओर आकृष्ट करती हैं। छोटे-छोटे बच्चे आमतौर पर गुब्बारे वाले, गोप-गप्पे वाले आदि को देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं। इस अभ्यास से गुब्बारे वाला (Balloon Seller) का दृष्टान्त चित्रण करना है, गुब्बारे वाला क्या-क्या साथ रखता है। क्या उसका पहनावा है ? इन बातों को ध्यान से सोचो और फिर वास्तविकता लाते हुए चित्र को पूर्ण करो, इसके बाद गली, बाजार व पार्कों के दृश्य भी बनाने का अभ्यास किया जाए।

अभ्यास-8

बाजार की घनी बस्ती से थोड़ा बाहर निकल कर यदि देखें तो फेरी वालों की भरमार आपने देखी होगी। सब्जीवाला, फल वाला आदि कई और सामग्री बेचने वाले प्रायः देखने को मिलते हैं। ये भी कम मनमोहक नहीं होते, ध्यान से देखने पर इनके वस्त्र, सामान उठाने के साधन आदि देखकर इनका चित्रांकन करने का अवश्य दिल करता है। इस अभ्यास में इसी प्रकार का एक 'सब्जी वाला' का दृष्टान्त चित्र तैयार करना है। अपना सारा सामान लेकर एक जगह पर बैठकर सब्जी बेचता है। नजदीक के मकानों से खरीददार सब्जी खरीदते हैं। सब्जी तोलने का ढंग, सब्जी रखने का ढंग, ग्राहक का सब्जी देखने का ढंग आदि गहराई से देखकर चित्र पूर्ण करो। इसके बाद फल विक्रेता, कपड़ा, विक्रेता, ऊन विक्रेता आदि के चित्र भी बनाएं।

अभ्यास-9

आपके कार्य में नीरसता न आ जाए इसलिए विषयों में विविधता लाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। पिछले अभ्यास में फेरी वालों आदि का चित्रण हुआ। अब कुछ विभिन्न त्योहारों की ओर झुकें। दीपावली, दशहरा, होली आदि राष्ट्रीय या अन्य स्थानीय त्योहार किसको नहीं भाते, बच्चे तो इन त्योहारों पर प्रफुल्लित होते हैं और अपनी खुशी को नाचते गाते प्रदर्शित करते हैं। अब इस अभ्यास में दीपावली का चित्रण किया जाएगा। दीपावली का मार्मिक दृश्य रात को ही देखने को मिलता है अतः रात को सफल दृश्य बनाने के लिए कागज की पार्श्व भूमि डार्क दिखाना भी आवश्यक सा है वरना चित्र में वास्तविकता सी नहीं आएगी, उसके बाद दीपों की माला, मोमबत्ती, पटाखे आदि से वातावरण जगमगाता दर्शाना है। दीपावली के बाद होली, दशहरा, स्थानीय उत्सव, मेले आदि अन्य चित्रों को भी बनाया जाए।

अभ्यास-10

त्योहारों के जगमगाते वातावरण से अब थोड़ा गांवों के वातावरण में प्रवेश करते हैं। गांव मैदानों एवं पहाड़ों से यद्यपि भिन्न होते हैं परन्तु गतिविधियां समान होती हैं। खेत दोनों जगह होते हैं। पहाड़ों के खेत सीढ़ी नुमा होते हैं। देखने में बहुत सुन्दर लगते हैं। इस अभ्यास में पहाड़ी खेतों में काम कर रहे परिवार के सदस्यों के लिए गृहिणी दोपहर का भोजन ले जा रही है। खेतों का दृश्य भी बनाया गया है। इसमें पहनावा, सामान ले जाने की चीजें आदि का अध्ययन होना भी आवश्यक है। इस अभ्यास के साथ-साथ गांवों के अन्य दृश्य जैसे घास ले जाती हुई महिला, खेत में जाता हुआ किसान, खेत जोतता हुआ किसान, चरवाहा आदि मार्मिक दृश्य भी बनाए जाएं।

अभ्यास-11

हिमाचल के ऊंचे इलाकों में जो वातावरण है उसका अपना ही एक आनन्द एवं अस्तित्व है। खासकर भेड़ पालने का धन्धा इस इलाके में बहुत प्रचलित है। भेड़ इनकी वास्तविक अमानत है। यहां के लोगों का पहनावा भी अपनी ही किस्म का है। इस अभ्यास में एक गद्दी अपनी भेड़ों के साथ किस प्रकार चला हुआ है, देखने को मिलेगा, पहनावा एवं भेड़ों का अच्छी प्रकार अभ्यास कर दृष्टान्त चित्र तैयार करो। इसके साथ अन्य इलाकों के वातावरण को दर्शाने वाले दृष्टान्त चित्र भी बनाओ।

अभ्यास-12

पिछले अभ्यास में नृत्य के मनभावक चित्रों का सृजन हुआ। नृत्य के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है संगीत का। बिना संगीत के नृत्य नीरस है। अतः इस अभ्यास में संगीतकारों का एक समूह आपके अभ्यास के लिए प्रस्तुत है। विभिन्न वाद्य यंत्रों का प्रयोग करते हुए संगीतकार दिखाए गए हैं। इसके लिए भी वास्तविक वातावरण का होना आवश्यक है। इसी प्रकार के अन्य वाद्य यंत्र बजाते हुए दृष्टान्त चित्रण किए जाएं। वे काफी रोचक एवं मनोहर बन सकते हैं चित्र में प्रधानता संगीतकारों को ही दी जाए।

अभ्यास-13

नृतक संगीतकार पर आधारित दृष्टान्त चित्रों का कार्य पूर्ण हुआ, अब सामूहिक लोक नृत्यों का भी कुछ आनन्द लिया जाए, प्रत्येक क्षेत्र में अपने-अपने स्थानीय नृत्य एवं संगीत के यंत्र होते हैं। प्रस्तुत चित्र में हिमाचल का लोक नृत्य वाद्य यंत्रों सहित दिखाया गया है। यह बहुत ही

अवश्य देखें होंगे। आप इन्हीं लोक नृत्यों के आधार पर दृष्टान्त चित्र बनाओ। अपने-अपने क्षेत्रों के स्थानीय नृत्य बनाएँ।

अभ्यास-14

हिमाचल के दूरस्थ इलाकों में यद्यपि यात्रा के साधन बसें, जीप, कार ही है, परन्तु आप लोगों ने कभी शिमला या जोगिन्द्रनगर आदि नगरों में जाकर रेलगाड़ी भी अवश्य देखी होगी, आपके इस अभ्यास में रेल गाड़ी स्टेशन से छोड़ने के लिए गार्ड हरी झंडी का संकेत दे रहा है। इस अभ्यास को बनाते समय रेलगाड़ी की बनावट गार्ड का ड्रैस आदि का ध्यान रखना आवश्यक है। आप इस अभ्यास के अन्तर्गत अपने स्थानीय बस अड्डे का दृष्टान्त चित्रण करो।

अभ्यास-15

अभी तक के अभ्यासों में विभिन्न मनोरंजक विषयों के चित्रण बने हैं जिसमें प्रसन्नता का वातावरण प्रदर्शित किया गया है। परन्तु हमारे जीवन में हर समय प्रसन्नता ही प्रसन्नता भी नहीं रहती, कई घटनाएं ऐसी होती हैं जिनमें दुःख का आभास होता है। कभी बीमार भी हो जाते हैं। खासकर बच्चे खान-पान व मौसम आदि का परहेज नहीं करते और फिर कभी बीमार भी हो जाते हैं। आप बीमार आदमी के पास जब जाते हैं तो उस समय का वातावरण दर्शाते हुए दृष्टान्त चित्रण करो। जैसे उस अभ्यास के आस-पास क्या वस्तुएँ होनी चाहिए। चित्र में आप देख रहे होंगे कि बीमार के पलंग के साथ वाली मेज़ में दवाई की शीशी, दवाई पीने का बर्तन, गिलास तथा दवाइयाँ रखी पड़ी हैं। बीमार को लेटे हुए हालत में डाक्टर देख रहा है। डाक्टर बीमार को खुश करने वाली बातें भी करता है। डाक्टर ने अपना बैग भी अपने पास रखा है। इसी प्रकार के कुछ हृदय स्पर्शी दृष्टान्त और बनाएं।

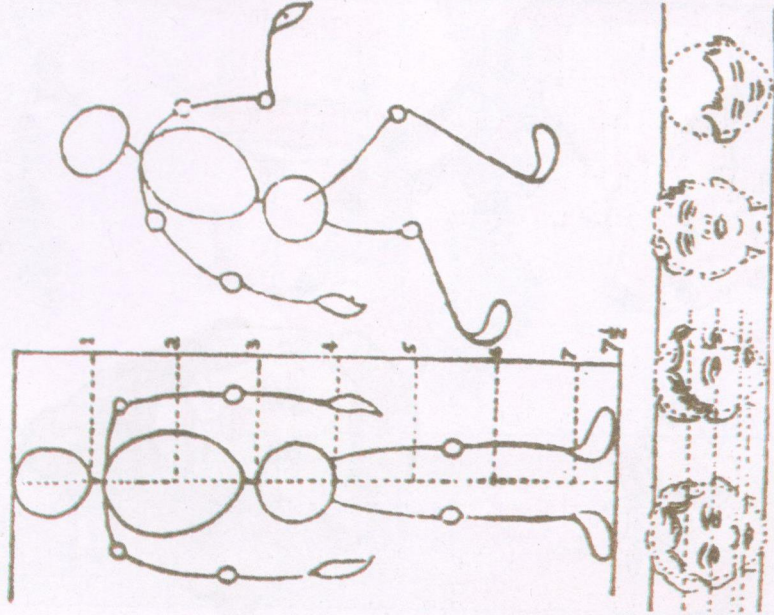
अभ्यास-16

जीवन में कभी-कभी दुर्घटनाओं का प्रकोप भी हो जाता है। पहाड़ी सड़कों पर बस, ट्रक आदि की दुर्घटनाएं अधिक होती हैं। मैदानों में रेल, बस, ट्रक, कारें मोटर साइकल की दुर्घटनाएं तो लगभग प्रतिदिन सुनने में आती रहती हैं। इस अभ्यास में आप देख रहे हैं कि एक ट्रक और स्कूटर की टक्कर से दुर्घटना हो गई है। स्कूटर टूट गया है। स्कूटर पर सवार व्यक्ति के पांव भी स्कूटर के नीचे आ गए और वह बुरी तरह घायल अवस्था में गिरा हुआ है। अब जब कई लोग आएंगे फिर स्थिति की छान-बीन होगी। घायल को अस्पताल पहुंचाना पड़ेगा। इस अभ्यास से सम्बन्धित अन्य दुर्घटनाओं में दृष्टान्त चित्र बनाओ।

पक्षियों की आकृतियाँ



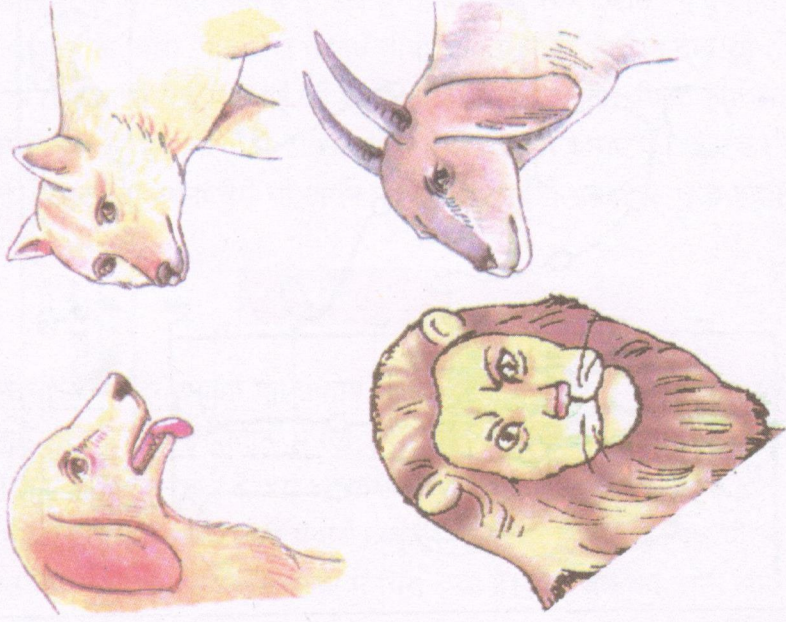
अध्यास-2



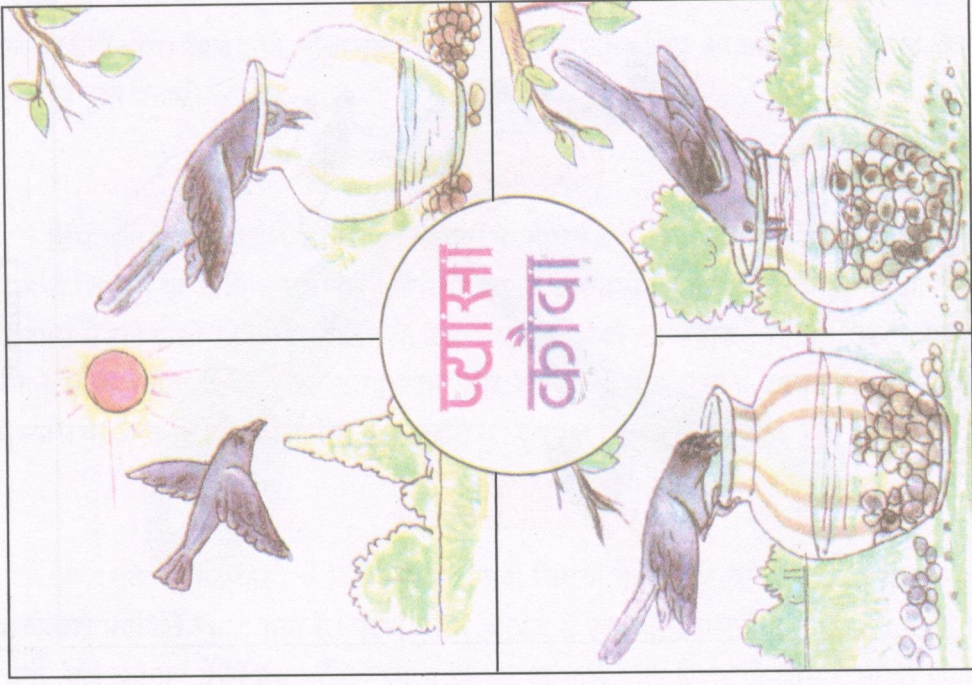
मानव आकृति का अनुपात

अध्यास-1

पशुओं की आकृतियाँ

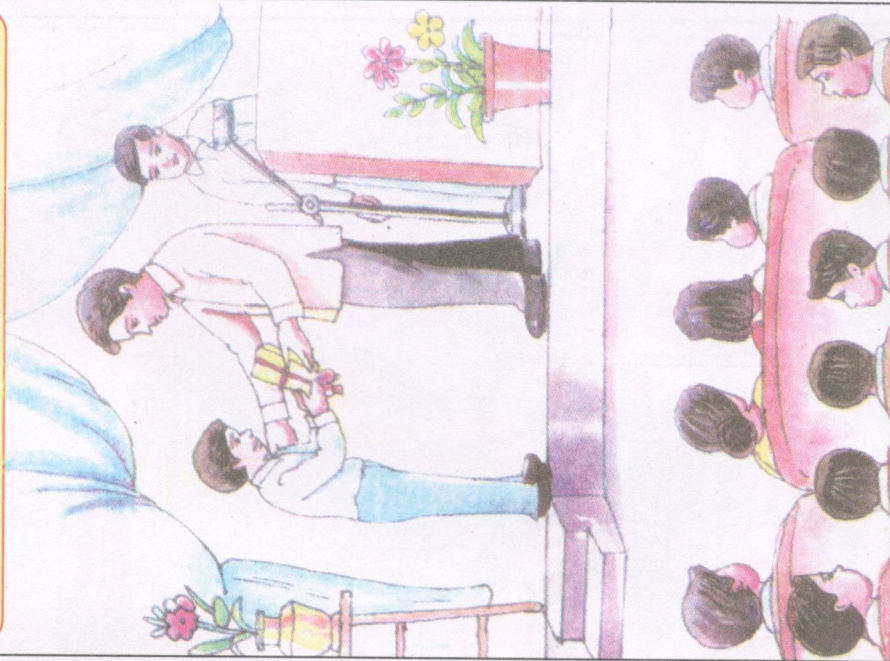


अभ्यास-3

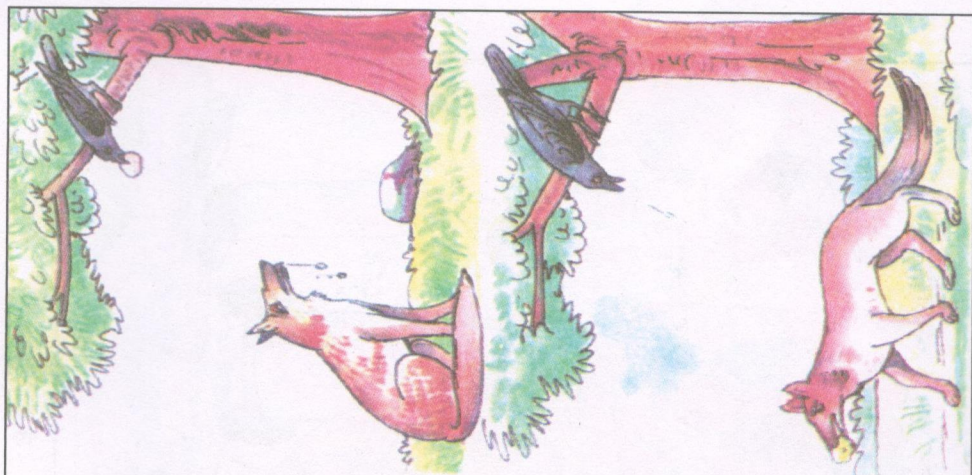


अभ्यास-4

ANNUAL PRIZE DISTRIBUTION FUNCTION

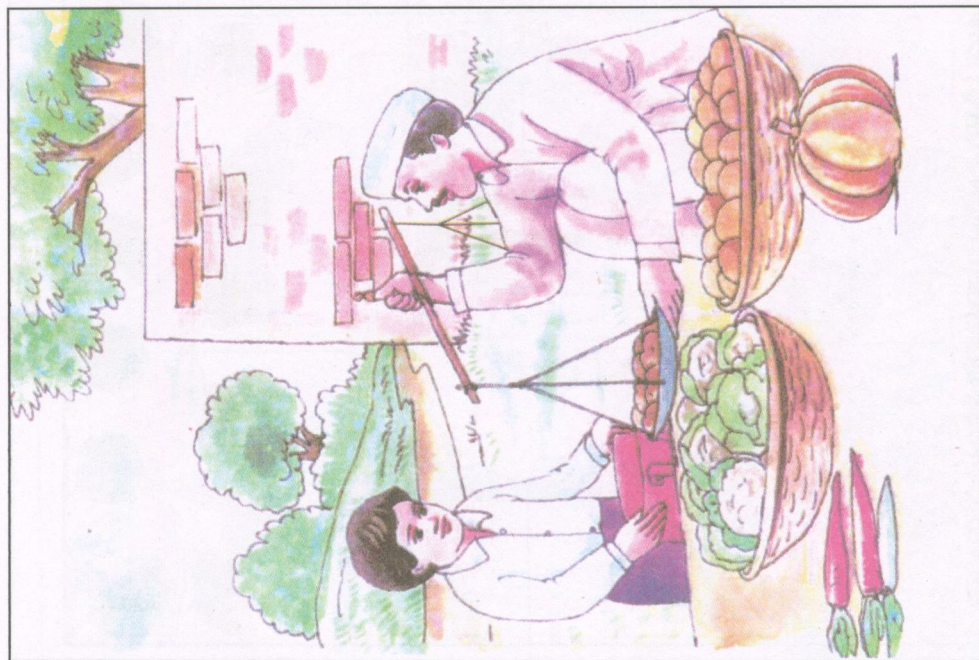


अभ्यास-6

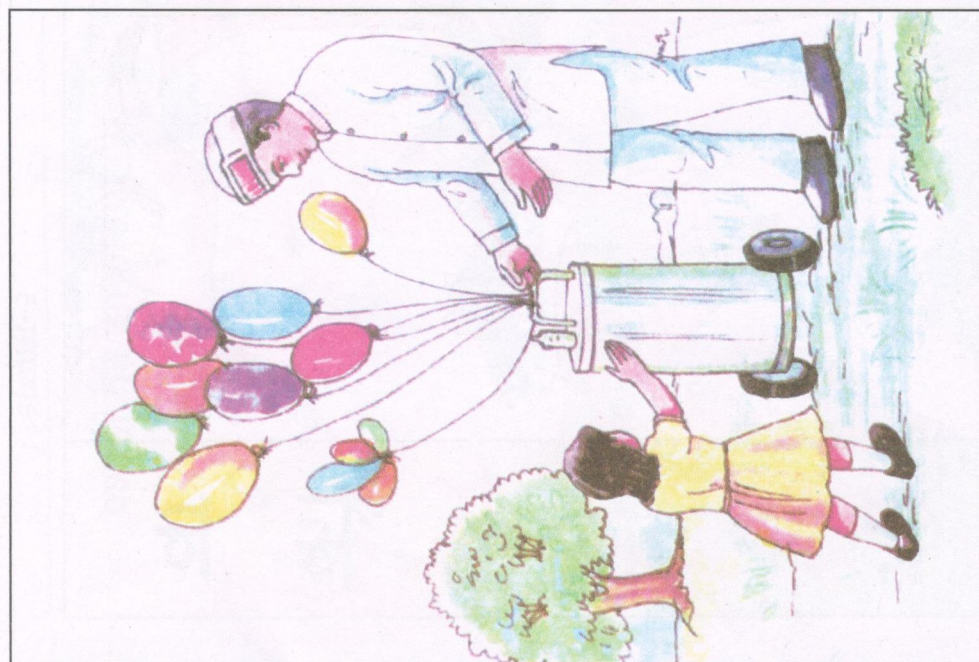


अभ्यास-5

हि म जिं और कि ठ



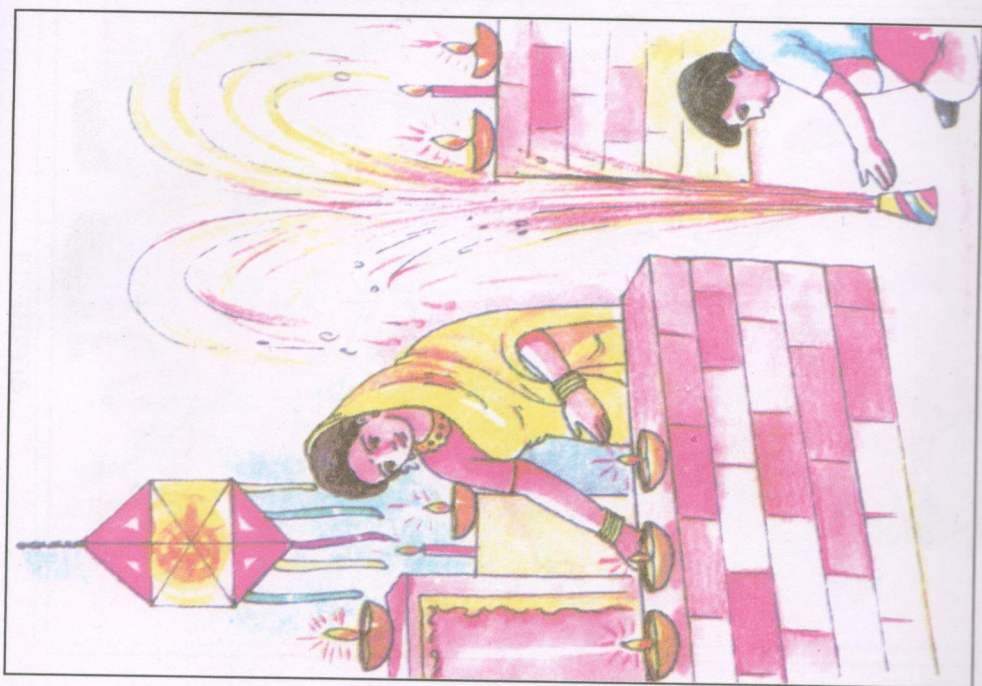
अभ्यास-8



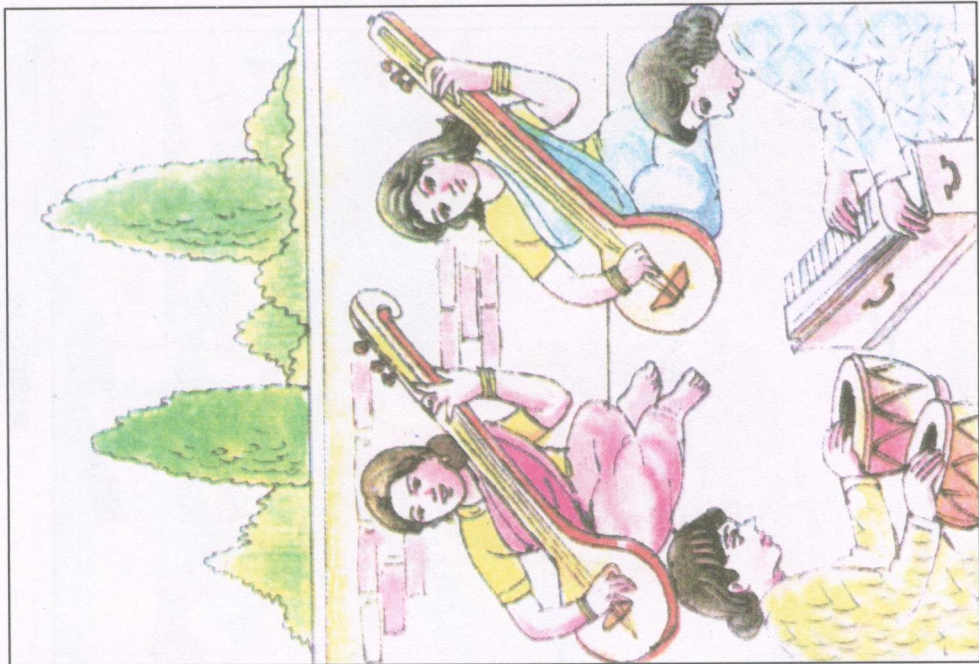
अभ्यास-7



अभ्यास-10



अभ्यास-9

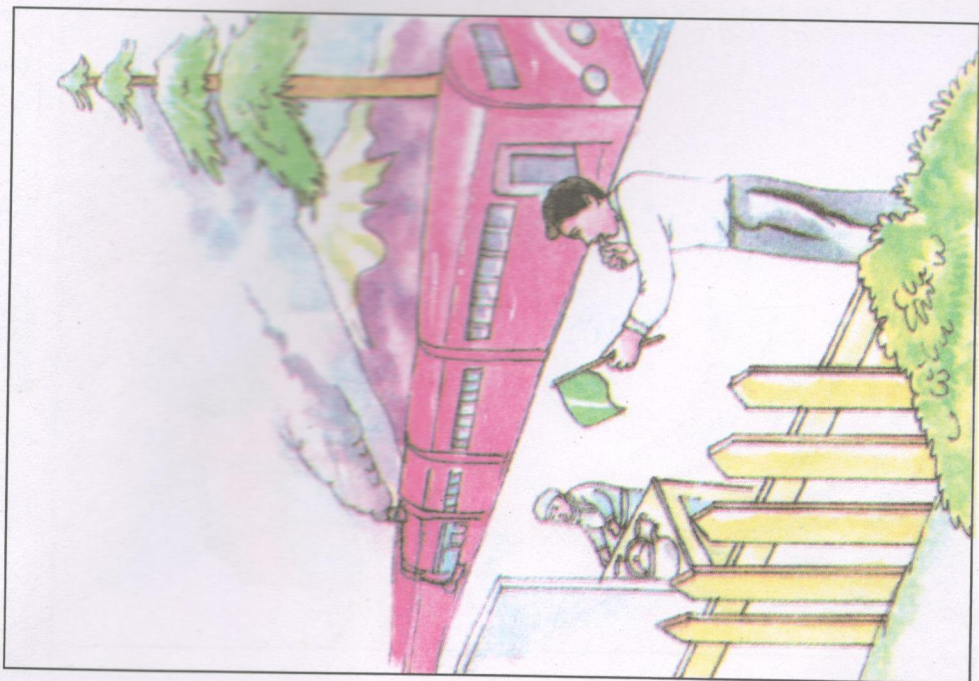


અભ્યાસ-12

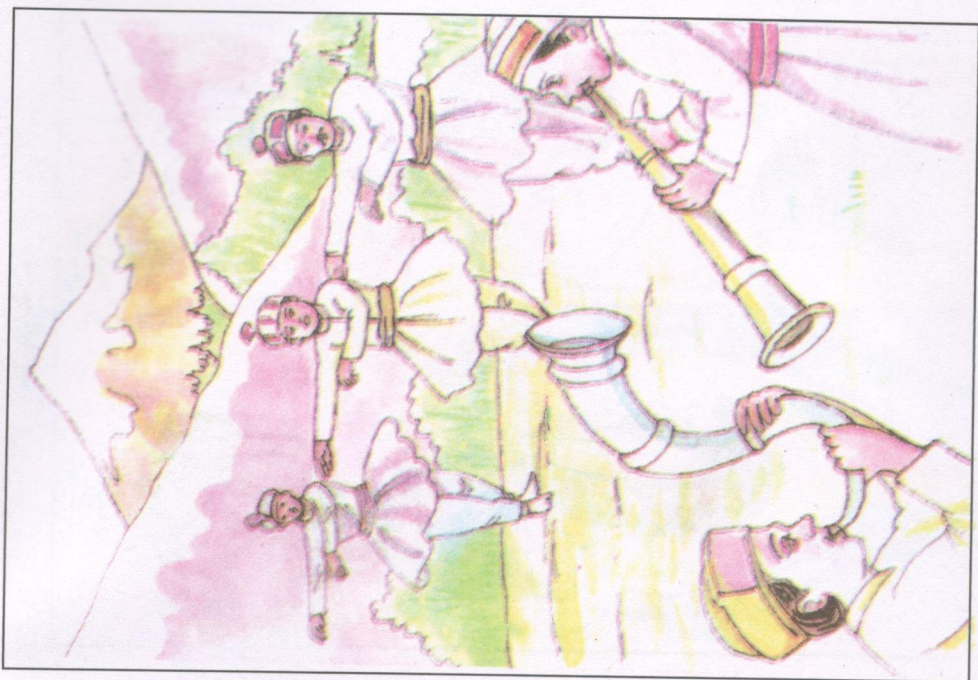


અભ્યાસ-11

અભ્યાસ-14

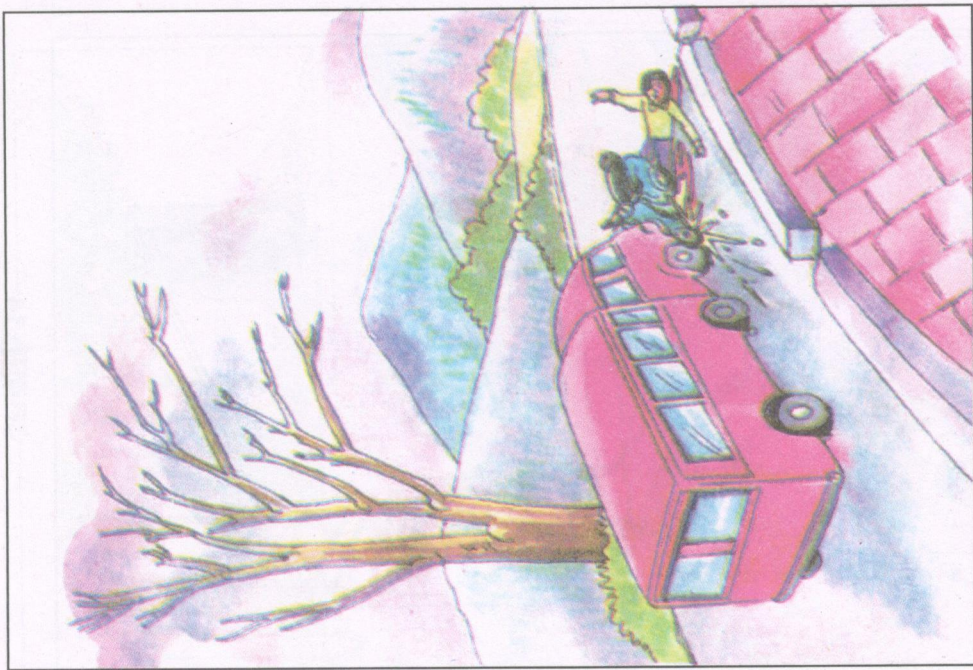


અભ્યાસ-13





अभ्यास-15



अभ्यास-16